International Journal of Applied Research 2021; 7(3): 143-144

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(3): 143-144
www.allresearchjournal.com
Received: 12-01-2021
Accepted: 16-02-2021

राहुल कुमार
शोधार्थी, 'वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा', भारत

Corresponding Author:
राहुल कुमार
शोधार्थी, 'वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा', भारत

स्त्री की उन्नायिका नासिरा शर्मा

राहुल कुमार

सारांश
स्त्रीयों के उन्नयन और आत्मनिर्भरता का प्रश्न हमेशा सामाज में उठता रहा है। स्त्रीयों को सम्मान और बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए 'नासिरा शर्मा' अपने उपन्यास में और कहानियों में प्रयासरत दिखती हैं, नारी का सम्मान एक सभ्य समाज का, निर्माण करता है। समाज कितना सभ्य और सुसंस्कृत है, इसका पता नारी की स्थिति को देखकर चलता है। सामाज में अधिकांश व्यक्ति नारी का सम्मान और उनके गरिमा का ख्याल रखते हैं। लेकिन कुछ विकृत मानसिकता के लोग भी समाज में है, जो स्त्रीयों को घर की नौकरानी की तरह देखते हैं। अधिकांश ऐसे लोग भी है जो स्त्रीयों को पुरूष के बराबर दर्जा देने के पक्षधर नहीं हैं। इन्ही बातों को ध्यान में रखकर 'नासिरा जी' नारी मुक्ति और नारी आत्मनिर्भरता को अपने लेखन में अधिक महत्व देती हैं।

कूट शब्द : स्त्रीयों, उन्नती, संघर्षशील, मुक्ति

प्रस्तावना
नासिरा शर्मा ने 'शाल्मली' उपन्यास में स्त्री का दृढ़ और संघर्षशील रूप का वर्णन किया है। 'शाल्मली' एक पात्र के रूप में ही नहीं, बल्कि अपने पति के विचारो से सामंजस्य बिठाने की कोशिश करती हुई, उसके कुण्ठित मानसिकता और हीनता के कारण अपमानित होकर, भाग्य पर रोते रहने के बजाए अपने दृढ़ विचार और आत्मविश्वास को कायम रखकर, परिस्थितियों से लड़ती रहती हैं और अपने नारी स्वाभिमान को जिन्दा रखती है। शाल्मली नारी की मनः स्थिति को उजागर करती है, जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था के स्वरूप और स्त्री मुक्ति की संभावनाओं पर बात करने से पहले स्वयं स्त्री को समझने की बात करती हैं। आखिर स्त्री को कैसी आजादी चाहिए और किससे।
'शाल्मसी' को पिता पढ़ा–लिखाकर एक आत्मनिर्भर स्त्री बनाना चाहते है और उसके लिए वह काफी प्रयास भी करते हैं। नरेश के साथ विवाह करा देते हैं कि नरेश उसका साथ जीवन भर देगा। लेकिन नरेश की मानसिक कुण्ठा और स्त्री को वश में रखने की रूढिवादी सोच ने शाल्मली को अपने वैवाहिक जीवन के कटु अनुभव और परेशानियों से वह अन्दर ही अन्दर घुटते हुए एक दिन अपने अधिकारों के प्रति सावधान हो जाती हैं। उसके अंदर की स्वाभिमानी नारी जाग उठती है, और शाल्मली अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगती है। 'शाल्मली' के चरित्र के आधार पर नासिरा शर्मा ने स्त्री के उत्थान एवं स्वतंत्रता की बात कही है।
नसिरा जी ने 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में 'महरूख' को भी स्त्री उन्नायिका के रूप में चित्रित किया है। महरूख एक संघर्षशील और मेहनती लड़की है। समाज की पाबंदियों के बावजूद वह अपने जीवन को अपने ढंग से जीती है।
नसिरा शर्मा के 'कहानी संग्रह' 'खुदा की वापसी' की कहानी में स्त्रीवर्ग के शोषित युवा मन की कराहटे हैं, जो शिक्षित या अशिक्षित स्त्री ही हैं। जिसका मन संभावनाओं से भरा है। उसके अंदर उमंगे हैं। वह जिन्दगी को जिन्दगी की तरह जीना चाहती है। खुले आकाश में पंख लगाकर उडना चाहती हैं।
'पारिजात' उपन्यास में नासिरा जी के उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास कहीं किरदार बनकर उभरता है तो कहीं वर्तमान और अतीत के बीच सुत्रधार की भूमिका निभाता नजर आता हैं। पारिजात केवल एक वृक्ष कथा और विश्वास मात्र नहीं है, बल्कि यथार्थ की धरती पर लिखी एक ऐसी तमन्ना है, जो रोहन के खून में रेशा–रेशा बनकर उतरी हैं और रूही के श्वासों मं स्वाब बनकर धुल गई हैं। उपन्यास में 'पारिजात' एक रूपक नहीं, दरअसल नए–पुराने रिश्तों की दास्तान हैं। रही वक्त के मार से घबराने के जगह पर अपनी एक नई जिन्दगी को तलाशने का साहस करती हैं।
कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का सभी उपन्यासों में सृजनात्मकता का निचोड है, जिसमें उनके विचार, भाषा, संवेदना और नारी विमर्श का उच्च समीक्षा देखने को मिलता हैं।

महिला कहानीकारों में प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में नासिरा शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नासिरा शर्मा को जहाँ हिन्दू और मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का अच्छा अनुभव होने के साथ दोनों धर्मों तथा अन्य धर्मों की स्त्रियो की संवेदनाओं एवं मानवीय चेतना की गहरी अनुभुति भी है। नासिरा शर्मा की कहानीयाँ स्त्री–पुरूष संबंधों की गहरी पड़ताल भी करती हैं। वर्तमान समय में स्त्री जीवन की अनेक विडम्बनाओं और सवालों को भी उठाती है। 1971 के दशक में सारे बदलावों के बावजूद, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में कोई उत्साहजनक परिवर्तन नहीं हुआ। इस दशक के बाद भारत में नारीवादी आंदोलन की सक्रियता बढ़ी। बालिका लिंगभेद, नारी स्वास्थ्य और स्त्री साक्षरता जैसे विषयों पर भी नारी आंदोलनकारी सक्रिय हुए।

हिन्दी कहानी ने भी इस तथ्य को गंभीरता से लिया। इस दशक की एक विशेष प्रवृत्ति नारी आंदोलन का नया रूप ग्रहण करना है, जिससे कहानियों में स्त्री विमर्श केन्द्रीयता प्राप्त करने लगता है। ध्यान देने वाली बात है कि नारी नियति का चित्रण करने में कहानी लेखिकाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं, जिसमें नासिरा शर्मा प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती हैं। नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह बुतखाना की पहली कहानी 'नमकदान' हैं। यह कहानी पति–पत्नि के संबंधों को बयां करती है, जिसमें कहानी का नायक जमाल और नायिका गुल दोनों पति–पत्नि हैं। जमाल अक्सर पत्नि को क्षिड़कता रहता है। छोटी–छोटी बातों पर विवाद करता हैं। परन्तु गुल कभी भी पुरूष की नारी के प्रति उपेक्षा वाली दृष्टि से घबराती नहीं है। वह भारतीय नारी की पहचान हैं।

उपर्युक्त कथन से यह बात निकलकर आती है कि भारतीय समाज को उन सभी स्त्रियों को यह अपनी नियति मान लेनी चाहिए, जिसके पति जमाल जैसे लोग हैं, नही तो आए दिन विवाद होगा या संबंध विच्छेद। दोनों के लिए एक स्त्री को तैयार रहना पडेगा, क्योंकि इस सभी के पीछे एक पुरूषवादी मानसिकता कार्य करती हैं। हम पुरूष हैं, चाहे जो करें, परन्तु तुम स्त्री हो। पतिव्रत का पालन करना तुम्हारा धर्म है, परन्तु पत्निव्रत का पालन करना हमारा धर्म नहीं हैं, क्योंकि यह नियम हमने बनाये हैं।

नासिरा शर्मा की एक अन्य कहानी 'अपनी कोख' में स्त्री की उस समस्या को उजागर करती है, जिसका स्त्री प्राचीनकाल से ही सामना कर रही है। यह प्रश्न है स्त्री के पहचान, अस्तित्व और अधिकार का। जिसका यह पुरूष सत्तात्मक समाज हमेशा से गला घोटता आया है, यद्यपि आज हम बात करते हैं, समानता, सामान अधिकारों, बराबरी का दर्जा देने की और सबसे बड़ी बात कि लड़के–लड़की में भेद न करने की क्या हम आज 21वीं सदी में इस मानसिकता से बाहर आ पाए हैं, कि लड़का हो या लड़की उसमें कोई अन्तर नहीं हैं। पड़ताल करने पर पायेंगे कि कुछ परिवर्तनों के साथ उसमें कोई बदलाव नहीं नहीं आया है। इन्ही बातों और विचारों को व्यक्त करती है यह कहानी 'अपनी कोख' इसके पात्र साधना, संदीप और सरिता है। साधना एम.ए उच्च अंक के साथ करना चाहती है। पर उसके घरवाले इसका विरोध करते है तथा उसका विवाह कर देते हैं। उसकी सास उसके गोद में पुत्र को देखना चाहती है, लेकिन संयोगवश साधना को लड़की होती है। फिर दूसरी बार भी साधना को लड़की ही होती है, फिर तीसरी बार साधना के गर्भ में लड़का होने का पता चलता है। साधना खुश होती है। लेकिन साधना ने लड़कियों को पंख लगाकर उड़ने के लिए उन्हें खुब पढ़ाना चाहती है। पुरूष समाज में लड़कियों को बिना भेद–भाव चलना सीखना चाहती हैं। नारी समाज में आत्मनिर्भर बने इन विचार से लड़कियों को शिक्षित बनाना चाहती हैं।

इस तरह नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री के उन्नयन और स्त्रीयों के अधिकार के लिए पात्रों के माध्यम से विचार व्यक्त किया हैं।

संदर्भ ग्रन्थः

1. नासिरा शर्मा : ठीकरे की मंगनी
2. नासिरा शर्मा : शाल्मली
3. नासिरा शर्मा : खुदा की वापसी
4. नासिरा शर्मा : 'अपनी कोख'
5. नासिरा शर्मा : पारिजात